श्री. कृष्णकांत राजाराम पाटील
एम.ए.पीएच.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
शिवराज महाविद्यालय,
गडहिंग्लज.

प्रमाणपत्र

मै प्रमाणित करता हूँ कि श्री.रशीद नजरूद्दीन तहसिलदार ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम.फिल (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध "सेठ गोविन्ददास के ऐतिहासिक नाटकों का अनुशीलन " मेरे निर्देशन में बड़े परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। मैं इनके शोध-कार्य से पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

स्थान - गडहिंग्लज
तिथि- ०७/०२/२००३

शोध - निर्देशक

(डॉ. कृष्णकांत राजाराम पाटील)

श्री. अर्जुन गणपति चव्हाण
एम.ए.बी.एड.पीएच.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर

<u>संस्तुति</u>

मै संस्तुति करता हूँ कि श्री.रशीद नजरूद्दीन तहसिलदार द्वारा एम.फिल. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत ''सेठ गोविन्ददास के ऐतिहासिक नाटकों का अनुशीलन'' शोध प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाय।

स्थान - कोल्हापुर.
तिथि -०७/०२/२००३

(श्री. अर्जुन गणपति चव्हाण)
Head
Dept. of Hindi,
Shivaji University,
Kolhapur-416004.

प्रख्यापन

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नही की गई है।

स्थान - कोल्हापुर.

तिथि - ०७/०२/२००३

शोध - छात्र

(श्री. रशीद नजरूद्दीन तहसिलदार)

प्राक्कथन

विषय चयन की प्रेरणा -

मेरी रूचि नाटक विधा रही है। कोई भी नाटक पढने या देखने के बाद उसके कथ्य की ओर आलोचनात्मक दृष्टि से देखने का आदी हूँ। नाटक के प्रति मेरे इस लगाव ने ही मुझे एम.फिल के अध्ययन के लिए प्रेरित किया। नाटक पढने की अपेक्षा, देखने की महसूस करने की चीज है। इनसे परे मन और आत्मा तक को यह अभिभूत करता है। नाटक की इन्ही गुणों की वजह से साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा इसका व्यापक और गहरा असर समाज जीवन पर पडता है। रंगमंचीयता की वजह से इसका प्रत्यक्ष असर समाज के सभी वर्ग के लोगों पर एक साथ हो जाता है। इसलिए कोई भी समस्या साहित्य की अन्य किसी भी विधा की अपेक्षा नाटक में चित्रित करके अपेक्षित प्रभाव की उम्मीद की जा सकती है। इसलिए श्रेष्ठ साहित्यिक नाटक विधा का ही उपयोग करते हैं। साहित्य की सभी विधाओं में नाटक श्रेष्ठ होने से मुझे उससे अधिक लगाव है। इसलिए मेरे अध्ययन के लिए मैंने नाटक विधा चुनी है।

विषय चयन का महत्व :-

हिन्दी साहित्य में नाटककार अपने नाट्य-सृजन में अपना योगदान करते रहते हैं। सेठ जी बुध्दिवादी कलाकार हैं। उन्होंने अपने नाटकों व्दारा बुध्दिवाद के धरातल पर समाज और व्यक्ति की विविध समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इनका बुध्दिवाद एक तीक्ष्ण सत्य है, जो अपनी आत्मा में यथार्थवादी होकर जीवन में नवीनता का स्फुरण करता है। समाज के कटु यथार्थ की ओर उन्मुख होना उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। आधुनिक जीवन और जगत को खरी और स्पष्ट आलोचना ही उनके नाटकों की मूल भित्ति है। उनमें न कल्पना की अतिरंजना है, न भावुकता का अनुरोध और न रोमांस का अस्वाभाविक आकर्षण। उनमें जीवन का कटु और तीव्र सत्य है। अत: इनके नाटक व्यक्ति और समाज के लिए प्रेरणा देनेवाले नाटक हैं। सेठ जी के 'हर्ष', 'शशिगुप्त' और

'शेरशाह' नाटक भी ऐसे ही हैं, जिनमें व्यक्ति और समाज की वास्तविकता का चित्रण किया गया है। विशेषत: लक्षणीय बात यह है कि इस विषय पर इस प्रकार का समन्वित अनुसंधान प्राप्त नहीं होता। मेरा शोध प्रबंध इसी अभाव पूर्ति का विनम्र प्रयास है।

अनुसंधान के प्रारंभ में उत्पन्न प्रश्न :-

सेठ जी के हर्ष, शशिगुप्त और शेरशाह इन नाटकों का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्नांकित सवाल उठे -

1. क्या, सेठ जी के व्यक्तित्व का उनके कृतित्व पर असर दिखाई देता है ?
2. सेठ जी ने विवेच्य नाटकों का परिचय कैसे दिया है ?
3. विवेच्य नाटकों का तात्विक विवेचन कैसे किया है ?
4. विवेच्य नाटकों में कौनसी समस्याओं का चित्रण हुआ है ?
5. विवेच्य नाटकों में ऐतिहासिकता किस प्रकार दिखायी देती है ?

अध्ययन के उपरान्त प्रश्नों के जो उत्तर मेरी दृष्टि से प्राप्त हुए हैं उन्हें उपसंहार में दर्ज किया गया हैं। अध्ययन की सुविधा हेतु मैंने लघु-शोध-प्रबंध का निम्नलिखित अध्यायों में विभाजन किया है।

प्रथम अध्याय :- ''सेठ गोविन्ददास : व्यक्तित्व एवं कृतित्व''

इस अध्याय में सेठ जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया है। व्यक्तित्व के अंतर्गत सेठ जी का जन्म, माता-पिता, बाल्य-काल, शिक्षा-दिक्षा, साहित्य के प्रति अनुराग, बहुमुखी व्यक्तित्व, राजनीतिक व्यक्तित्व, वैवाहिक जीवन, सेवाव्रती गोविन्ददास, भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था, परिवार, वेशभूषा, मित्रमंडली, धनवान व्यक्ति आदि विविध पहलुओं के द्वारा स्पष्टीकरण किया है। साथ ही कृतित्व के अंतर्गत सेठ जी के समग्र साहित्य का परिचय दिया है और अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

द्वितीय अध्याय :- ''सेठ गोविन्ददास के विवेच्य नाटकों का सामान्य परिचय''

इस अध्याय में नाटक का स्वरूप, वस्तुतत्व का महत्व और घटना विन्यास की दृष्टि से नाटकों की कथावस्तु के लिए आवश्यक शर्तों का सैद्धांतिक विवेचन प्रस्तुत किया है और अंत में निष्कर्ष दिया है।

तृतीय अध्याय :- ''सेठ गोविन्ददास के विवेच्य नाटकों का तात्विक विवेचन''

इस अध्याय में प्रस्तावना, कथावस्तु, पात्र या चरित्र चित्रण, कथोपकथन, भाषाशैली, देशकाल वातावरण, उद्देश, शीर्षक की सार्थकता इन सभी तत्वों की दृष्टि से नाटकों का तात्विक विवेचन किया है। साथ ही अंत में निष्कर्ष दिया है।

चतुर्थ अध्याय :- ''सेठ गोविन्ददास के विवेच्य नाटकों में चित्रित समस्याएँ''

इस अध्याय में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक और नारी समस्याओं का विवेचन किया है और अंत में जो तथ्य आये हैं उनके आधार पर निष्कर्ष दिया है।

पंचम अध्याय :- ''सेठ गोविन्ददास के विवेच्य नाटकों में ऐतिहासिकता''

इस अध्याय में एतिहासिक नाटकों की पृष्ठभूमि, इतिहास, अर्थ एवं परिभाषा, ऐतिहासिक नाटकों की परिभाषा और स्वरूप, ऐतिहासिक नाटकों की श्रेणियाँ तथा वर्ग विभाजन और गुण, ऐतिहासिक नाटकों का कालविभाजन, विवेच्य नाटकों की ऐतिहासिक विशेषताएँ, इतिहास और ऐतिहासिक नाटक, ऐतिहासक नाटकों का उद्देश्य, ऐतिहासिकता की परिभाषाएँ, विवेच्य ऐतिहासिक नाटकों में ऐतिहासिकता बतायी गयी है इसमें जो निष्कर्ष प्राप्त हुये हैं वे निम्न प्रकार से हैं -

उपसंहार :-

उपर्युक्त सभी अध्यायों के निष्कर्षों को सार रूप में उपसंहार में प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करनेवाले गुरूजनों, हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

मेरे निर्देशक शिवराज कॉलेज के प्रपाठक एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग के डॉ. के. आर. पाटील जी के बहुमोल निर्देशन की यह फलश्रुति है। मैं उनके सहयोग से ही मेरा लघु शोध-प्रबंध पूरा कर पाया। मैं उनका सदा ऋणी रहूँगा।

श्रद्धेक गुरूवर्य हमारे हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. अर्जुन चव्हाण, डॉ. पांडुरंग पाटील, डॉ. ए.एस. मणियार, प्रा. शहा आदि के समय-समय पर प्राप्त मार्गदर्श , मेरी उम्मीद तथा जिज्ञासा बढाते रहा। इन सभी का मैं आभारी हूँ।

इस लघु-शोध-प्रबंध की पूर्णता में मेरे माता-पिता तथा भाई-बहन सभी बराबर के हिस्सेदार है। जिन्होंने मुझे परिवारिक चिंताओं से मुक्त रखकर मुझे प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर मेरी परम सहेली कु. सुजाता पाटील, अर्चना गायकवाड , और मित्र अण्णासाहेब हरदारे इन्होंने मेरी हमेशा सहायता कर अनुसंधान कार्य को गतिशील बनाए रखने के लिए निरंतर प्रोत्साहन तथा उनकी प्रेरणा से ही मैं अपना लघु-शोध-प्रबंध पूरा करने में सफल रहा हूँ । साथ ही दिलीप शिंगे, संजय यादव, जितेन्द्र कोले, गफूर परकुटे, पप्पू यादव और काका माने आदि की सदिच्छा से ही मेरा यह कार्य संपन्न हुआ। इन सभी का मैं आभारी हूँ ।

शिवाजी विश्वविदयालय के ग्रंथपाल और उन सभी कर्मचारियों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ, जिन्होने मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से टंकन-लेखन करनेवाले **पार्वती एंटरप्रायझेस,** कोल्हापुर के श्री.संतोष पिंपळे और उनके सहकारियों ने शीघ्रता से किया। मैं उनका आभारी हूँ।

अंत में सभी गुरूजनों, सहृदयों एवं आत्मजनों की प्रेरणा तथा सदिच्छाओं के लिए पुनश्च धन्यवाद।

(श्री. रशीद तहसिलदार)

अनुक्रमणिका

पृष्ठ क्रमांक

प्रथम अध्याय :-''सेठ गोविन्ददास : व्यक्तित्व एवं कृतित्व।'' 1 - 12

1.1 व्यक्तित्व

1.1.1 जन्म

1.1.2 माता-पिता

1.1.3 बाल्यकाल

1.1.4 परिवार

1.1.5 शिक्षा-दिक्षा दी (दीक्षा का उल्लेख नहीं है)

1.1.6 वैवाहिक जीवन

1.1.7 मित्र मंडली

1.1.8 भारतीय संस्कृति के प्रति अस्था का

1.1.9 बहुमुखी व्यक्तित्व

1.1.10 धनवान व्यक्ति

1.1.11 उदार व्यक्तित्व

1.1.12 सेवाव्रती गोविन्ददास

1.1.13 राजनीतिक व्यक्तित्व

1.1.14 साहित्य के प्रति अनुराग

1.1.15 हिन्दी-साहित्य सम्मेलन और स्वाधीनता संग्राम में दिलचस्पी

1.1.16 सामाजिक जागरण और राष्ट्र सेवा

1.1.17 गांधीवादी विचारों के समर्थक

1.2 कृतित्व

1.2.1 सेठ जी के नाटय-साहित्य का परिचय

1.2.1.1 ऐतिहासिक नाटक

1.2.1.2 एतिहासिक एकांकी

1.2.1.3 सामाजिक नाटक

1.2.1.4 सामाजिक एकांकी-समस्या प्रधान

1.2.1.5 समस्यात्मक नाटक

पृष्ठ क्रमांक

1.2.1.6 सांस्कृतिक नाटक

1.2.1.7 सेठ जी के एक पात्री नाटक

1.2.1.8 हास्य-व्यंग्य प्रधान एकांकी

1.2.1.9 कुछ कथाओंपर रचित पूरे नाटक और एकांकी

1.2.2 उपन्यासकार

1.2.3 काव्यसंग्रह

1.2.4 यात्रा-साहित्य

1.2.5 आत्मकथा

1.3 निष्कर्ष

संदर्भ सूची

द्वितीय अध्याय -

''सेठ गोविन्ददास के विवेच्य नाटकों का सामान्य परिचय ।'' 13-67

2.1 नाटक का स्वरूप

2.2 'हर्ष ' नाटक का सामान्य परिचय

2.3 'शशिगुप्त' नाटक का सामान्य परिचय

2.4 'शेरशाह' नाटक का सामान्य परिचय

2.5 निष्कर्ष

संदर्भ सूची

तृतीय अध्याय - **68-110**

''सेठ गोविन्ददास के विवेच्य नाटकों का तात्विक विवेचन।''

3.1 प्रस्तावना

3.2 कथावस्तु

3.3 पात्र एवं चरित्र-चित्रण

3.4 कथोपकथन या संवाद

3.5 भाषाशैली

3.6 देशकाल वातावरण

3.7 उद्देश

पृष्ठ क्रमांक

3.8 शीर्षक की सार्थकता

3.9 निष्कर्ष

संदर्श सूची

चतुर्थ अध्याय -

" सेठ गोविन्ददास के विवेच्य नाटकों में चित्रित समस्याएँ ।" 111-147

4.1 प्रस्तावना

4.2 'समस्या' अर्थ

4.3 विवेच्य नाटकों में चित्रित समस्याएँ

4.3.1 सामाजिक समस्याएँ

4.3.1.1 उच्चता और वंश की समस्या

4.3.1.2 यौन की समस्या

4.3.1.3 प्रेम की समस्या

4.3.1.3.1 विवाहोत्तर की समस्या

4.3.1.3.2 विवाहपूर्व प्रेम की समस्या

4.3.1.4 विधवा समस्या

4.3.1.5 एकता के अभाव की समस्या

4.3.2 राजनीतिक समस्याएँ

4.3.2.1 परकीय आक्रमण की समस्या

4.3.2.2 देश-विभाजन की समस्या

4.3.2.3 न्याय-विभाजन की समस्या

4.3.2.4 सत्ता के दुरूपयोग की समस्या

4.3.2.5 दलबदलू नेता या राजाओं की समस्या

4.3.2.6 शरणार्थी की समस्या

4.3.2.7 लोकतंत्र की समस्या

4.3.2.8 उत्तराधिकारी की समस्या

4.3.3 आर्थिक समस्याएँ

4.3.3.1 जमींदारों, महाजनों के द्वारा शोषण की समस्या

पृष्ठ क्रमांक

4.3.3.2 गुलामगिरी की जटिल समस्या

4.3.3.3 ऋण की समस्या

4.3.3.4 प्राकृत्तिक अपत्तियों की समस्या

4.3.4 सांस्कृतिक समस्याएँ

4.3.4.1 विश्वबन्धुत्व की समस्या

4.3.4.2 नैतिक मूल्य की समस्या

4.3.4.3 संस्कारविहीन लोगों की समस्या

4.3.4.4 पाश्चात्य संस्कृति की समस्या

4.3.5 धार्मिक समस्याएँ

4.3.1 धर्म के क्षेत्र में अनैतिकता एवं् कर्मकांड की समस्या

4.3.2 जाति-पाँति की समस्या

4.3.3 धर्मों के रीति-रिवाजों की समस्या

4.3.6 मनोवैज्ञानिक समस्याएँ

4.3.6 .1 अतृप्ति की समस्या

4.3.6 .2 कुण्ठा की समस्या

4.3.6 .3 घुटन या बदले की भावना की समस्या

4.3.6 .4 लालसा की समस्या

4.3.6 .5 मनोबल के अभाव की समस्या

4.3.7 नारी - समस्या

4.4 निष्कर्ष

संदर्भ सूची

पंचम अध्याय -

'' सेठ गोविन्ददास के विवेच्य नाटकों में ऐतिहासिकता।'' **148-180**

5.1 ऐतिहासिक नाटकों की पृष्ठभूमि

5.2 'इतिहास' अर्थ एवं् परिभाषाएँ

5.3 ऐतिहासिक नाटकों की परिभाषाएँ और स्वरूप

5.4 ऐतिहासिक नाटकों की श्रेणीयाँ, वर्गविभाजन और गुण

पृष्ठ क्रमांक

5.5	ऐतिहासिक नाटकों का कालविभाजन	
5.6	ऐतिहासिक नाटकों की विशेषताएँ	
5.7	इतिहास औरऐतिहासिक नाटक	
5.8	ऐतिहासिक नाटकों का उद्देश्य	
5.9	ऐतिहासिकता की परिभाषाएँ	
5.10	विवेच्य नाटकों में ऐतिहासिकता	
5.10.1	विवेच्य नाटकों में विषय वस्तु का आधार इतिहास	
5.10.2	विवेच्य नाटकों में इतिहास और वर्तमान का समन्वय	
5.10.3	विवेच्य नाटकों में यथार्थ और कल्पना	
5.10.4	विवेच्य नाटकों में ऐतिहासिक पात्र	
5.10.5	विवेच्य नाटकों में ऐतिहासिक तिथियाँ	
5.10.6	विवेच्य नाटकों में ऐतिहासिक घटनास्थल	
षष्ठ अध्याय	**-''उपसंहार''**	**181-182**
	संदर्भ ग्रंथ सूची	**183-184**